**ओ३म्**

**‘वैदिक जीवन और यौगिक जीवन परस्पर पर्याय हैं’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

ईश्वर, जीव और प्रकृति नित्य, अनादि व अनुत्पन्न सत्तायें हैं। विगत अनन्त काल से जीवात्मा अपने कर्मानुसार जन्म लेता व मृत्यु को प्राप्त होता आ रहा है। अनेक बार जीवात्मा का मोक्ष भी हुआ और मोक्ष से पुनः मनुष्य जन्म व कर्मानुसार प्रायः सभी इतर योनियों में जन्म लेता रहा है। जीव की जीवन यात्रा का एक योनि व जीवन में आदि व अंत होता है परन्तु प्रवाह से यह जीवनयात्रा अनादि है, आरम्भ व अन्त रहित है। ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप है और जीव ज्ञान व गति (तप, कर्म व पुरुषार्थ आदि) गुणों वाला है। स्वाभाविक गुणों की उन्नति से ही यह अपनी जीवन यात्रा को जीवन के उद्देश्य के अनुसार चला सकता है परन्तु महाभारतकाल के बाद ऐसी अवस्था उत्पन्न हुई कि परा विद्याओं के ज्ञान की असुलभता के कारण मनुष्य अपने उद्देश्य को भूलकर नाना प्रकार के मिथ्याचारों, ज्ञान, बुद्धि व ईश्वरीय की वेद-आज्ञा के विरुद्ध आचरण करते रहे जिससे उनकी उन्नति न होकर अवनति व पतन ही होता रहा। इसका एक परिणाम विदेशियों की दासता व घोर नैतिक पतन भी रहा। ऋषि दयानन्द ने सत्य की खोज करते हुए मनुष्य जीवन के यथार्थ उद्देश्य व उसकी प्राप्ति के साधनों का पता लगाया जो और कुछ न होकर वेद विहित कमों को करके ज्ञान प्राप्ति और वैदिक जीवन व्यतीत करते हुए ईश्वरोपासना से ईश्वर का साक्षात्कार कर सभी दुःखों, जन्म-मरण से अवकाश सहित मोक्ष प्राप्त करना ही सिद्ध होता है।

 मनुष्य संसार में एक शिशु के रुप में माता-पिता से जन्म लेता है। माता-पिता उसे शिक्षित करते व कराते हैं। यदि मनुष्य को जन्म से अच्छा वातावरण मिले और गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली से वेदनिष्ठ आचार्यों से वेद और वैदिक साहित्य का पूर्ण ज्ञान हो जाये, तो वह उस ज्ञान के अनुसार आचरण करते हुए ईश्वरोपासना के सभी साधनों का उचित प्रयोग कर योग पथ पर आरुढ़ होकर समाधि अवस्था को प्राप्त कर ईश्वर साक्षात्कार कर सकता है। समाधि अवस्था में ईश्वर के साक्षात्कार से उसके जीवन का उद्देश्य पूर्ण हो जाता है। महर्षि पतंजलि के योग दर्शन में शरीर को स्वस्थ रखकर ज्ञान प्राप्ति और उपासना के प्रमुख साधन ईश्वर प्रणिधान सहित प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि से जीवात्मा अपने दोषों को दूर कर ईश्वर के चिन्तन में डूब कर वा खो कर, उससे एकाकार होकर, उसमें एकनिष्ठ होकर व तदरूप बनकर ही जीवन का लक्ष्य प्राप्त होता है। उसके साक्षात्कार से ही जीवन के सभी दुःखों की निवृति व आवागमन से छूटकर मनुष्य की आत्मा एक परान्तकाल तक मुक्ति में चला जाता हैं। मुक्ति में रहते हुए वह ईश्वर के आनन्द का भोग करते हुए अनेकानेक दिव्य शक्तियों को प्राप्त कर ब्रह्माण्ड में स्वेच्छापूर्वक विचरता और मुक्त जीवात्माओं से सम्पर्क कर आनन्द को भोक्ता है। इसी लक्ष्म को प्राप्त कराने के लिए महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन का प्रणयन किया जिसके आठ अंग समाधि अवस्था में जीवात्मा को ईश्वर का साक्षात्कार कराकर मृत्योपरान्त मोक्ष आनन्द का अनुभव व उपलब्धि कराते हैं।

 योग के आठ अंग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि हैं। यम व नियम से जीवात्मा को शुद्ध व पवित्र बनाने तथा आत्मा में विहित अविद्या वा दुष्प्रवृत्तियों सहित उसके असद्-संस्कारों को यम-नियमों के पांच-पांच अंगों अंहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान से दूर किया जाता है। आसन और प्राणायाम से शरीर को स्वस्थ, बलवान और निरोग बनाया जाता है और प्राणायाम से मन को एकाग्र व ईश्वर चिन्तन में लगाया जाता है। अष्टांग योग में पांचवे स्थान पर प्रत्याहार है। प्रत्याहार में सभी ज्ञानेन्द्रियों को अपने विषयों से हटा कर अपने चित्त व आत्मा में समाहित करना होता है। प्राणायाम के अभ्यास और मन व आत्मा को ईश्वर चिन्तन व जप आदि में लगाने से यह स्थिति प्राप्त होती है। योग का छठा सोपान धारणा है जो देह के किसी अंग विशेष अथवा लक्ष्य विशेष में चित्त को बांध देने व टिका देने को कहते है। धारणा के सिद्ध होने पर ईश्वर का ध्यान करना सुगम हो जाता है। ध्यान मन को सांसारिक व इन्द्रियों के विषयों के चिन्तन से पूर्णतया मुक्त व रोक देने को कहते है। जब मन में विषयों का चिन्तन रुक जायेगा तो आत्मा ईश्वर के चिन्तन-मनन, स्तुति-प्रार्थना व जप आदि में लग कर ईश्वर से जुड़ कर उससे एकाकार होकर समाधि अवस्था में ईश्वर साक्षात्कार को प्राप्त होते हैं। समाधि अवस्था वह अवस्था है कि जब योगी ईश्वर को समर्पित हो जाता है तथा उसे अपनी किसी इन्द्रिय व उसके विषयों का किंचित भी ज्ञान नहीं रहता। वह ईश्वर के ध्यान में निमग्न रहकर उसके आनन्द का अनुभव करता है। ईश्वर विषयक कोई शंका व जिज्ञासा इस अवस्था में शेष नहीं रहती और वह पूर्णतया निर्भ्रान्त ज्ञान को प्राप्त होता है। समाधि अवस्था को प्राप्त कर ईश्वर साक्षात्कार करना ही मनुष्य जीवन का परमोत्तम लक्ष्य व उद्देश्य है। इसको प्राप्त कर लेने पर संसार में कुछ भी प्राप्त करना शेष नहीं रहता। इस स्थिति को प्राप्त मनुष्य जीवनमुक्त कहा जाता है जो ईश्वर का साक्षात्कर होने पर मोक्ष का अधिकारी हो जाता है और कालान्तर में मृत्यु होने पर वह मुक्त हो जाता है। समाधि व मोक्ष में जीवात्मा ईश्वर के सान्निध्य से पूर्ण सुख का भोग करता है।

 मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी, योगेश्वर श्री कृष्ण जी और स्वामी दयानन्द जी के जीवन को देखने पर ज्ञात होता है कि यह महान् आत्मायें ईश्वर भक्त होने सहित वैदिक जीवन व्यतीत करती थीं। ईश्रोपासना वैदिक जीवन का प्रमुख कर्तव्य है। इसी से ईश्वर से प्रीति होकर अन्त में ईश्वर का साक्षात्कार होता है। ऋषि दयानन्द जी ने सन्ध्या सहित पंचमहायज्ञों का विधान व विधि देकर संसार के लोगों पर महान् उपकार किया है जिसका पालन कर सभी मनुष्य मोक्ष मार्ग के पथिक बनकर मोक्षगामी हो सकते हैं। योगी मनुष्य के लिए अंहिसा अनिवार्य है परन्तु वह श्री राम, श्री कृष्ण व दयानन्द जी के जीवन की अंहिसा ही होनी चाहिये जिसमें धार्मिक लोगों की रक्षा एवं आधार्मिक लोगों का विरोध एवं उनके प्रति यथायोग्य व्यवहार ही उचित होता है। सत्य का मण्डन और असत्य का खण्डन भी योगी के लिए आवश्यक होता है। जो मनुष्य असत्य का खण्डन करने के स्थान पर अपनी लोकैषणा व अन्य अवगुणों के लिए दुष्टों व दुर्दान्तों के प्रति भी अहिंसा का पोषण करता है वह योगी व सच्चा मनुष्य नहीं कहा जा सकता। श्री राम, श्री कृष्ण व ऋषि दयानन्द, इन तीनों महापुरुषों का जीवन ही आदर्श जीवन था जिनका पूरा पूरा अनुकरण योगी को करना चाहिये। योगी के लिए योग दर्शन सहित वेद, उपनिषद, दर्शन व वेदानुकूल मनुस्मृति आदि ग्रन्थों का अध्ययन व उसके अनुरूप व्यवहार भी आवश्यक है। हमें महाभारतकाल के बाद एक ही सर्वोत्तम योगी अनुभव होता है और वह केवल महर्षि दयानन्द ही थे जिन्होंने अपने राष्ट्रीय व सामाजिक किसी कर्तव्य की उपेक्षा नहीं की। स्वार्थ उनको छू भी नहीं गया था। वह महलों व आलीशान भवनों में न रहकर खुले आसमान या कुटिया अथवा शहर के बाहर बगीचों व उद्यानों आदि में रहा करते थे। वेशभूषा में मात्र एक कौपीन व कुछ काषाय वस्त्र ही होते थे। अपरिग्रह का वह मूर्त रूप थे। वह **’भूतो न भविष्यति’** सदृश योगी, महायोगी व योगेश्वर थे। यदि हम उनके जीवन व उनके प्रत्येक कार्य को अपना आदर्श मानकर व बनाकर आचरण करें तो हमारा निश्चय ही कल्याण होगा। जो व्यक्ति वेद आदि ग्रन्थ का अध्ययन किसी कारण न कर सकें, वह सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविघि, आर्याभिविनय और पंचमहायज्ञविधि आदि ग्रन्थों को पढ़कर भी सिद्ध योगी बन सकते हैं। योगी बनने की इच्छा करने वाले व्यक्ति के लिए ऋषि दयानन्द के जीवनचरित को पढ़कर उसके अनुरुप जीवनयापन व आचरण करना भी ‘योगः कर्मसु कौशलम्’ के अनुसार जीवन में उन्नति प्रदान करने वाला होगा, यह निश्चित है। इति शम्।

 **-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘आर्य विद्वान श्री भावेश मेरजा जी को जन्म दिवस**

**पर शुभकामनायें एवं हार्दिक बधाई’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आज ऋषिभक्त और आर्य विद्वान श्री भावेश मेरजा जी का जन्म दिवस है। आपने अपनी आयु क 53 वर्ष पूर्ण किये हैं तथा आज चव्वनवें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। आप गुजरात के मोरवी जिले में ऋषि दयानन्द के जन्म स्थान टंकारा कस्बे के बाजू वाले एक गांव में जन्में हैं और सम्प्रति भरूच में कार्यरत हैं। श्री भावेश जी ऋषि जीवन और उनके साहित्य पर अधिकार पूर्वक लिखते हैं जो विद्वानों और पाठकों द्वारा समान रूप से श्रद्धा व रुचिपूर्वक पढ़ा जाता है और सभी उसकी प्रशंसा करते हैं। आप हिन्दी में तो लेख व पुस्तक आदि लिखते ही हैं, अंग्रेजी में भी लिखते हैं। आपने अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद कार्य भी किये हैं। गुजराती भाषा के भी आप जानकार हैं और इस भाषा में आपने कुछ हिन्दी पुस्तकों का अनुवाद किया है। आप एक अच्छे चिन्तक एवं वक्ता भी हैं। आपका जीवन व्यवसायिक वा आजीविका विषयक कार्यों के अतिरिक्त ऋषि जीवन व वैदिक सिद्धान्तों पर लेखन द्वारा प्रचार व प्रसार को समर्पित है। आज आपको जन्म दिवस के अवसर आर्यजगत के विख्यात संन्यासी स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी, रोजड़ ने अपनी शुभकामनायें दी हैं। हमें स्वामी जी के शुभकामनाओं के वाक्य बहुत अच्छी लगे हैं। अतः हम इसे यहां धन्यवाद सहित प्रस्तुत कर रहे हैं। स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी ने लिखा है- **“सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः”** अर्थात् ‘‘आपकी सभी कामनाएं शुभ और पूर्ण हों। आपको जन्म दिन की बहुत बहुत शुभ कामनाएं और आशीर्वाद. आप स्वस्थ, प्रसन्न, सब प्रकार से समर्थ और धनवान रहते हुए, लम्बी आयु को प्राप्त करें।”आज के दिन यदि संभव हो, तो अपने घर में यज्ञ-हवन करके भारतीय पद्धति से अपना जन्म दिन मनायें। यदि यज्ञ-हवन न भी कर पायें, तो भी आज के दिन कोई एक गुण अवश्य धारण करें और कोई एक दोष अवश्य छोड़ें, तभी जन्म दिन मनाना सार्थक है। यदि आप विदेशी हैं, तो भले ही केक काटकर जन्म दिन मनाएँ। परंतु फिर भी आज के दिन मोमबत्तियाँ बुझाएँ नहीं, बल्कि जलाएँ ही । यदि आप भारतीय हैं, तो जितने वर्ष पूरे हो गये, उतने दीपक जलाएँ । खुशी के अवसर पर ज्योति जलाई जाती है, बुझाई नहीं जाती । इसके साथ-साथ आज के दिन अपने पूरे शरीर का डाक्टरी परीक्षण कराएँ. यदि कोई रोग निकले, तो उसकी विधिवत् चिकित्सा कराएँ, जिससे आपकी आयु दीर्घ और सुखमय हो सके. **--स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक।”**

 हमने भावेश जी के जीवन में एक यह गुण भी देखा व जाना है कि वह किसी आर्य विद्वान के विरुद्ध अपने व पराये विद्वानों द्वारा लिखे व कहे गये आलोचना व निन्दा के वचनों को स्वीकार न कर उसका पूर्ण प्रमाणों व तर्कों से खण्डन एवं प्रतिवाद करते हैं तथा उन्हें निरुत्तर कर देते हैं। दूसरे उनकी आलोचना करें या अपशब्द लिखें व बोले तो भी आप शालीनता का त्याग न कर आलोचक के प्रति आदर भाव बनायें रखते हैं और शान्त रहते हैं। यह बहुत अच्छा प्रशंसनीय गुण है। हमें उनका यह गुण विद्वानों के प्रति गहरे आदर का द्योतक अनुभव होता है। आर्यसमाज के सभी विद्वानों को उनका यह गुण ग्रहण करना चाहिये।

आज जन्म दिवस पर हम अपनी शुभकामनायें देते हुए आदरणीय श्री भावेश मेरजा जी के स्वस्थ जीवन, दीघार्यु सहित उनके परिवार की सुख-समृद्धि एवं विघ्नों से रहित जीवन की कामना करने के साथ उनसे अपेक्षा करते हैं कि वह ऋषि जीवन व उनके सिद्धान्तों का अपनी लेखनी वा वाणी से प्रचार करना जारी रखे रखेंगे।

 **-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**